"मार्क्सवादी एंव अम्बेडकरवादी की दृष्टि से स्वाधीनता–पश्चात हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का अध्ययन"

दयालबाग शिक्षण संस्थान(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा की हिन्दी विषय
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
में शोध विषय की रूपरेखा
2014

निर्देशिका

डॉ0 कमलेश कुमारी रवि
एसो. प्रोफेसर
एम.ए.हिन्दी, इतिहास,बी.एड.
पी– एच.डी. एवं पोस्ट
ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पत्रकारिता,
हिन्दी विभाग, कला संकाय, डी.ई.आई.

शोधार्थिनी

अनुराधा सिंह

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान(डीम्ड विश्व विद्यालय)
दयालबाग, आगरा– 282005

"मार्क्सवादी एंव अम्बेडकरवादी की दृष्टि से स्वाधीनता–पश्चात् हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का अध्ययन"

मार्क्स आधुनिक समाजवाद या साम्यवाद के जनक माने जाते हैं। मार्क्स के सि़द्धातों को विद्धानों ने मार्क्सवाद का नाम दिया है, परन्तु मार्क्स ने स्वंय उन्हें वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया है।

उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब पूंजीवादी मर्यादाएँ स्पष्ट हो रही थीं और इतिहास के मंच पर श्रमिक वर्ग का प्रभावशाली उदय हो रहा था। उसी समय मार्क्स–एंगेल्स ने तत्व ज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक एंव राजनीतिक दृष्टिकोण से शास्त्रीय व्यवस्था का निर्माण किया और इस व्यवस्था में द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद,राजनीतिक, अर्थशास्त्र और शास्त्रीय साम्यवाद का समावेश हुआ।

मार्क्स एक गतिशील विचारधारा है जिसके अनुसार आज तक का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है और ये वर्ग उत्पादन सम्बधों के कारण निर्मित होते हैं। मार्क्स प्रणीत भौतिकवाद का मानना है कि उत्पादन पद्धति, उत्पादक सम्बन्ध और वर्ग कलह के कारण सामाजिक स्थितियों में अंतर होता हैं। धर्म, नीति, कला, साहित्य और संस्कृति का आधार आर्थिक प्रेरणा है। यह प्रेरणा ऐतिहासिक भौतिकवाद का सूत्र है। मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत देकर पूंजीवाद में मजदूरों का शोषण कैसे होता है यह सिद्ध किया। पूंजीपति मजदूारों को छः घण्टों का परिश्रमिक देकर उनसे बारह घण्टे काम करवाया जाता था और इस पूंजीपति को छः घण्टों का श्रम मुफ्त में मिल जाता था। और पूंजीपति के लिए मुफ्त मिले हुए श्रम का अतिरिक्त मूल्य तैयार हो जाता था इस अतिरिक्त मूल्य का आगे पूंजी में रूपान्तरित हो जाता हैं और मजदूरों का शोषण जारी रहता है उनके कम्युनिष्ट मैनिफेस्टो घोषणा पत्र के अनुसार इस समाज व्यवस्था को समाप्त करने के लिए सभी मजदूरो को एकत्रित होकर क्रान्ति करनी चाहिए। मार्क्सवाद एक क्रान्तिकारी विचारधारा होने पर भी वह भारतीय परिप्रेक्ष्य में

असफल रही है, क्योंकि उसमें दलित या शूद्र शब्द न होकर शोषित और सर्वहारा हैं। उनका विश्वास था कि सर्वहारा को श्रम शोषण और आर्थिक दासता से मुक्त करने पर उसकी और परिणामतः सारे समाज की अन्य सारी समस्याएं स्वंय हल हो जाएगीं। वर्ग के साथ वर्ण व्यवस्था का विश्लेषण और पहचान न करने के कारण ही मार्क्सवाद भारतीय समाज को भीतर से कहीं भी बदल नही सका है।

मार्क्स की विचार धारा का प्रभाव डॉ. अम्बेडकर जी पर भी पडा परन्तु वह इस विचार धारा से पूर्णतः सहमत नही थे क्योंकि मार्क्सवाद में जाति अंत का विचार नहीं है। डॉ. अम्बेडकर ने मार्क्स के शोषित लोगों के प्रति दृष्टिकोण की प्रशंसा की और वह इससे सहमत भी थे कि शोषण की मूल जड़ संपत्ति के अधिकार में निहित है, फिर भी वह यह नहीं चाहते थे कि उसे रक्तिम क्रांति तथा सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को डंडे से समाप्त किया जाए ऐसा करने से व्यक्ति की स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है। वह समानता के लिये स्वतंत्रता का बलिदान करना नहीं चाहते थे। डॉ० अम्बेडकर जी ने भारतीय संविधान का निर्माण करके समाज के सभी वर्गों के लिए उन्नति तथा विकास के अवसर प्रदान किये और स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय का प्रावधान दिया। तत्पश्चात शोषित वर्ग में चेतना जागृत कर उनके अधिकारों का बोध कराया जिससे शोषित समाज में जागृति उत्पन्न हुई और इस अम्बेडकरवादी विचारधारा का प्रभाव हमारे साहित्यकारों और उनके साहित्य पर भी पड़ा जो कि वर्तमान में हमें दलित विमर्श या दलित साहित्य के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

दलित शब्द का अर्थ दबे, कुचले, मसले हुए रौंदे हुए, अछूत, शूद्र से लिया गया, परन्तु आज इसका अर्थ व्यापक हो गया है, किसानों, मजदूरों, शोषित वर्ग को दलित कहा गया। दलितों की जीवनकथा उतनी ही पुरानी है, जितनी भारतीय हिन्दू संस्कृति है। हजारों सालों से दलितों की स्थिति गुलामों जैसी थी। उच्च्य वर्ग के समाज ने दलित समुदाय को गाँव के बाहर रहने के लिए विवश किया। उनकी शिक्षा प्राप्ति पर प्रतिबंध लगाया गया। उनको धनसंचय करने की अनुमति नहीं थी। उन्हें अच्छा पहनने अच्छा खाने पर पाबंदी थी। उनके साथ पशुओं

से भी बुरा व्यवहार होता रहा है, ऐसी हीन अवस्था में हजारों वर्ष दलित समाज ने बिताये। दलितों की पीड़ा, घुटन अपमान तिरष्कार शोषण अवहेलना तथा समाज व्यवस्था का घृणित रूप दलित आत्मकथाओं के माध्यम से हमारे सामने उजागर होता है।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा विधा आधुनिक युग की देन है, लेकिन इसका अस्तित्व बहुत प्राचीन है। हिंदी साहित्य में आत्मकथा का प्रारम्भ बनारसी दास जैन कृत अर्द्धकथानक 1641 ई० से हुई थी। इस आत्मकथा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह गद्य में न होकर पद्य में हैं। यह आत्मकथा ऐसे समय में लिखी गई जब कोई आत्मकथा लिखने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। आत्मकथा में लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति करता है। जिसमें अनुभूति की सच्चाई होती हैं आत्मकथाएं व्यक्तियों जानने समझने और परखने में सबसे अधिक मार्गदर्शन करती है। इसके द्वारा हम व्यक्तियों के निजी जीवन के आत्म संघर्ष और उनके समय की परिस्थितियों और समस्याओं से परिचित हो सकते हैं। भारतीय साहित्य में आत्मकथा विधा का नया रूप वर्तमान में दलित आत्मकथाओं के माध्यम से उभरकर सामने आ रहा है।

दलित साहित्य की अन्य विधाओं की तरह दलित आत्मकथाएं पहले मराठी में आयीं। डॉ० किशोरीलाल रैंगर के अनुसार– "दलित साहित्य में आत्मकथा लेखन का आरम्भ 'अस्मितादर्श' 1976 के दीपावली विशेषांक से हुआ। 'मैं और मेरा लेखन' शीर्षक से केशव मेश्राम, बंधुमाधव राजाढाले, नामदेव ढशाल, मोगीराज बाघमोर, बाबूराव बागुल आदि मराठी दलित लेखकों से संक्षिप्त आत्मकथ्य प्रकाशित हुए। इन आत्मकथ्यों की प्रेरणा से ही कालांतर में स्वतंत्र रूप से दलित आत्मकथाएं अस्तित्व में आई।"

हिन्दी साहित्य में भगवान दास की 'मैं भंगी हूँ' 1981 सर्वप्रथम दलित आत्मकथा है इस आत्मकथा की विशेषता यह है कि यह व्यक्ति विशेष की आत्मकथा न होकर सम्पूर्ण दलित जाति की कहानी है। जिसमें सम्पूर्ण दलित समाज का यथार्थ चित्रण होता है। इसके बाद अन्य दलित आत्मकथाएं भी प्रकाश में आईं। जैसे– मोहनदास नैमिशराय (अपने–अपने पिंजरे)

भाग–1 व 2, ओम प्रकाश वाल्मीकि (जूठन), श्यौराज सिंह बेचैन (मेरा बचपन मेरे कंधों पर), सूरजपाल चौहान (तिरस्कृत, संतप्त) तुलसीराम (मुर्दहिया) श्याम लाल जेदिया (एक भंगी कुलपति की अनकही दास्तान) ,माता प्रसाद (झोपड़ी से राजभवन तक), कौशल्या बैसंत्री (दोहरा अभिशाप), सुशीला टाकभौरे (शिकंजे का दर्द) आदि। ये आत्मकथाएं पुरानी सामाजिक संरचनाओं को अस्वीकार करती हैं इन आत्मकथाओं में लेखकों के वास्तविक जीवन का कड़वा सत्य छिपा हुआ है। दलित आत्मकथा लेखको ने सम्पूर्ण समाज व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। इसलिए इनकी अपनी विशेष महत्ता है। अन्य आत्मकथाओं की अपेक्षा दलित आत्मकथाओं की विशेषता यह है कि इसमें दलित जीवन का यथार्थ गहराई से उभर कर आया है जो भारतीय साहित्य के लिये नया है जहाँ सामान्य आत्मकथाओं में व्यक्ति का चित्र तो होता है, वहीं दलित आत्मकथाओं में सम्पूर्ण समाज का चित्रण होता है। दलित आत्मकथाएं समाज की समस्याओं से ऐसे समय और समाज से परिचित कराती हैं कि हम उस वास्तविकता से अनभिज्ञ रहते हैं। यही कारण है कि दलित आत्मकथाएं मार्क्स से ज्यादा अम्बेडकर से प्रभावित हैं क्योंकि प्रत्येक आत्मकथाकार वर्ण और जाति के दंशों से बहुत गहराई तक आहत हैं उनके सारे शोषण और उत्पीड़न का कारण वर्ग नही वर्ण व्यवस्था और जातिवाद है जो उन्हें मनुष्य होने का दर्जा भी नही देता ।

भारतीय समाज में आज भी सवर्णवादी मानसिकता अनेक परिवर्तन और विकास के बाद भी नही बदली हम इक्कीसवीं सदी में सांस ले रहें हैं लेकिन सामाजिक रूप से आज भी उतने ही पिछडें हुए हैं जितनें वर्षों पूर्व थें ।

मेरे शोध का उददेश्य यह है कि हिन्दी साहित्य के दलित आत्मकथा लेखकों ने नये प्रयोगों और दलित साहित्य को मानव यथार्थ के नए सिद्धातों से जोडकर नये आयाम स्थापित किये हैं तथा इस शोध विषय के माध्यम से दलित समाज की पीड़ा घुटन समस्याओं से परिचित कराकर साहित्य को एक नई दृष्टि देने का मेरा एक नगण्य प्रयास होगा । हिन्दी

साहित्य में दलित आत्मकथाओं पर शोध कार्य का अभाव ही रहा है यह मेरा मौलिक एंव नवीन कार्य होगा ।

'मार्क्सवादी एंव अम्बेडकरवादी की दृष्टि से स्वाधीनता–पश्चात् हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का अध्ययन' दलित साहित्य को एक नया आयाम एवं नयी दिशा प्रदान कर सकेगा ।

शोधार्थिनी

अनुराधा सिंह

रूपरेखा

''मार्क्सवादी एंव अम्बेडकरवादी दृष्टि से स्वाधीनता–पश्चात् हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का अध्ययन''

भूमिका– विषयचयन, पूर्ववर्ती कार्य, मौलिकता एवं महत्त्व

प्रथम अध्याय – **मार्क्सवाद की अवधारणा**

1–मार्क्सवाद की भूमिका

2–मार्क्सवादी सिद्धांत

2–1द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

2–2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

2–3वर्ग– संघर्ष

2–4अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त

द्वितीय अध्याय– **अम्बेडकरवादी विचारधारा**

1–सामाजिक विचार

2–राजनीतिक विचार

3–आर्थिक विचार

4–धार्मिक विचार

5–मार्क्सवाद एवं अम्बेडकरवादः साम्य, वैषम्य

तृतीय अध्याय– **हिन्दी दलित आत्मकथाओं का स्वरूप एवं विकास**

1–दलित का अर्थ एवं परिभाषा

2–हिन्दी आत्मकथा का स्वरूप एवं विकास

3–हिन्दी दलित आत्मकथा की परम्परा

चतुर्थ अध्याय– **प्रमुख दलित आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय**

1–मैं भंगी हूँ (भगवानदास)

2– अपने–अपने पिंजरे– भाग 1व 2 (मोहनदास नैमिश्राय)

3– जूठन (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

4– मेरा बचपन मेरे कंधों पर (श्यौराज सिंह बेचैन)

5– तिरस्कृत, संतप्त (सूरजपाल चौहान)

6–मुर्दहिया,मणिकर्णिका (तुलसीराम)

7– एक भंगी कुलपति की अनकही दास्तान (श्यामलाल जेदिया)

8– दोहरा अभिशाप (कौशल्या बैसंत्री)

9– शिकंजे का दर्द (सुशीला टाकभौरे)

10– झोपड़ी से राजभवन तक (माता प्रसाद)

पंचम अध्याय– **मार्क्सवाद एंव अम्बेडकरवाद का दलित आत्मकथाओं पर प्रभाव**

उपसंहार

परिशिष्ट – **आधार ग्रंथ**

संदर्भ ग्रंथ

शब्दकोश

पत्र–पत्रिकाएँ

नोट– उपर्युक्त अध्यायों में शोध निर्देशिका के सुझावों के आधार पर कुछ परिवर्तन किया जा सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि–जूठन–राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली संस्करण–1999
2. कौशल्या बैसंत्री–दोहरा अभिशाप ,परमेश्वरी प्रकाशन दिल्ली ,संस्करण –1999
3 तुलसीराम– मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2010
4 भगवान दास –मैं भंगी हूँ, गौतम बुक सेंटर दिल्ली–संस्करण–2011
5. माता प्रसाद– झोपड़ी से राजभवन तक
6. मोहनदास नैमिशराय– अपने–अपने पिंजरे– (भाग–1 व 2), वाणी प्रकाशन दिल्ली संस्करण–1995
7. श्यामलाल जेदिया–एक भंगी कुलपति की अनकही दास्तान
8. श्यौराज सिंह बेचैन– मेरा बचपन मेरे कंधों पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2009
9. सुशीला टाकभौरे– शिकंजे का दर्द, वाणी प्रकाशन दिल्ली संस्करण–2011
10. सूरजपाल चौहान–तिरस्कृत, संतप्त, वाणी प्रकाशन दिल्ली संस्करण–2006

सहायक ग्रंथ

1. डॉ० एम.एस. लवानिया, शशि के जैन–परिचयात्मक सामाजिक विचारक, रिसर्च पब्लिकेशंस जयपुर संस्करण–2008
2. एस.एल. दोषी– भारतीय सामाजिक विचारक, रावत पब्लिकेशंस दिल्ली संस्करण–2009
3. एस.एल. दोषी, पी.सी. जैन– प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारक (कॉम्ट से मर्टन तक) रावत पब्लिकेशंस दिल्ली संस्करण–2001
4. एस.एस. गौतम–भारत में प्रासंगिक अम्बेडकर या मार्क्स, सिद्धार्थ बुक्स दिल्ली, संस्करण–2014
5. डॉ० ओ.पी. वर्मा – भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विकास प्रकाशन कानपुर संस्करण–2004
6. गणपति चन्द्र गुप्त – हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोक भारती प्रकाशन दिल्ली, दसवाँ संस्करण–2006
7. डॉ० गोविंद त्रिगुणायत– शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भारतीय साहित्य मंदिर प्रकाशन संस्करण–1956
8. डॉ० धर्मकीर्ति–बुद्ध कालीन वर्ण– व्यवस्था और जाति, परममित्र प्रकाशन दिल्ली संस्करण–2002
9. डॉ० नारायण शर्मा– हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान कानपुर संस्करण–2007
10. रामनाथ शर्मा, राजेन्द्र के शर्मा– प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारक एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स दिल्ली प्रथम संस्करण–1996

11. डॉ० रामविलास शर्मा– गॉधी, अम्बेडकर लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएं, वाणी प्रकाशन दिल्ली–संस्करण–2000–08

12. रामानुज तिवारी–ब्राह्मणवादी परम्परा एवं सामाजिक चेतना जानकी प्रकाशन पटना संस्करण–2002

13. लाला हरदयाल–क्रांतिकारी कार्लमार्क्स, गौतम बुक सेंटर दिल्ली संस्करण–2012

14. विजय कुमार पुजारी– डॉ० अम्बेडकर जीवन दर्शन, गौतम बुक सेंटर दिल्ली संस्करण–2010

15. विवेक निराला– निराला साहित्य में दलित चेतना, शिल्पी प्रकाशन इलाहाबाद संस्करण–2009

16. डॉ० शांति स्वरूप गुप्त– वैदिक काल से आरक्षण तक, साहित्य सहकार प्रकाशन दिल्ली संस्करण–2000

17. सत्यनारायण–बाबा साहिब डॉ० भीमराव अम्बेडकर इंडिपेडेंट पब्लिशिंग कम्पनी दिल्ली संस्करण–1992

18. डॉ० सुनील गोयल एवं श्रीमती संगीता गोयल– महान समाजशास्त्रीय विचारक आर. वी.एस.ए. पब्लिशर्स जयपुर संस्करण–2002

19. डॉ० सोहन शर्मा – भारतीय समाज में वर्ग संघर्ष, के.एन. पचौरी प्रकाशन गाजियाबाद संस्करण–1998